नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

राजनीति में शुचिता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम

20 अगस्त 2025 को गृह मंत्री अमित शाह द्वारा संसद में प्रस्तुत संविधान (130वाँ संशोधन) विधेयक, 2025 भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाएगा. यह विधेयक उन प्रावधानों को लेकर आया है, जिनका उद्देश्य राजनीति को भ्रष्टाचार और अपराधिकरण की दलदल से बाहर निकालना है. इस विधेयक का सबसे अहम प्रावधान यह है कि यदि प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या कोई मंत्री गंभीर अपराध में 30 दिनों तक हिरासत में रहता है, तो वह स्वचालित रूप से पदच्युत हो जाएगा.

यह कदम केवल कानूनी सुधार नहीं है, बल्कि राजनीतिक जवाबदेही का नया मानदंड स्थापित करता है. अब सत्ता का संरक्षण अपराध का कवच नहीं बनेगा. भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यही है कि जनता के प्रतिनिधि कानून से ऊपर नहीं हैं. यह संशोधन इसी भावना को मजबूती देता है. प्रधानमंत्री हो या मुख्यमंत्री, जब तक वे निर्दोष साबित नहीं होते, तब तक सार्वजनिक पद पर बने रहने का नैतिक अधिकार उनके पास नहीं होना चाहिए. विधेयक में यह भी व्यवस्था की गई है कि यदि कोई नेता बाद में दोषमुक्त होकर रिहा हो जाता है, तो उसे पुन: पदभार दिया जा सकता है. यह प्रावधान उन आशंकाओं को दूर करता है कि विपक्षी राजनीति के दबाव में किसी नेता को जानबूझकर निशाना बनाया जा सकता है. इस तरह यह संशोधन कठोरता और न्याय, दोनों के बीच संतुलन साधने का प्रयास है.

भारत में राजनीति के अपराधिकरण पर वर्षों से बहस होती रही है. चुनावी सुधार आयोग, सर्वोच्च न्यायालय और सिविल सोसाइटी बार-बार इस मुद्दे पर चिंता जताते रहे हैं. ऐसे में यह संशोधन उस दिशा में एक ठोस पहल है. यदि यह प्रावधान लागू होता है, तो जनता का विश्वास न केवल चुनावी प्रक्रिया में, बल्कि शासन-प्रशासन की निष्पक्षता में भी और गहरा होगा. दरअसल,भारतीय लोकतंत्र की ताक़त उसकी पारदर्शिता और जवाबदेही है. जनता का विश्वास तभी कायम रह सकता है जब उसके प्रतिनिधि नैतिकता की कसौटी पर खरे उतरें. यदि कोई शीर्ष नेता हिरासत में है और गंभीर अपराध का आरोप झेल रहा है, तो उसके पद पर बने रहने से शासन की निष्पक्षता और लोकतांत्रिक मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लगते हैं.

लोकतंत्र की असली पूंजी जनता का विश्वास है. जब लोग देखते हैं कि आरोपी नेता भी सत्ता की कुर्सी पर जमे रहते हैं, तो उनका भरोसा प्रणाली से उठने लगता है. यह विधेयक जनता को यह भरोसा दिलाने का प्रयास है कि सत्ता की कुर्सी नैतिकता और शुचिता की जिम्मेदारी के साथ आती है, न कि अपराध से बचने की ढाल के रूप में. कुल मिलाकर इस विधेयक पर विस्तृत बहस होगी और विपक्ष अपनी आशंकाएं भी रखेगा. परंतु बड़े दृष्टिकोण से देखें तो यह विधेयक भारतीय राजनीति को स्वच्छ, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है.लोकतंत्र की आत्मा शुचिता है—और इस संशोधन को उसी आत्मा को सुरक्षित रखने के प्रयास के रूप में देखा जाना चाहिए. बहरहाल, इस बिल को पास करने को लेकर जल्दबाजी नहीं होनी चाहिए. संसद में विपक्ष को बहस के लिए और अपनी बात कहने के लिए पर्याप्त समय मिलना चाहिए. विपक्ष के उपयोगी सुझावों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए. दरअसल यह एक महत्वपूर्ण संशोधन है. इस पर व्यापक विचार विमर्श और सहमति की जरूरत है.

राधाकृष्णन से सुदर्शन का औपचारिक मुकाबला

उपराष्ट्रपति पद के चुनाव में व्हिप लागू नहीं होता. इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि क्रॉस वोटिंग के जरिए कोई भी उम्मीदवार चुनाव जीत सकता है. विपक्ष के पास इतनी ताकत नहीं है कि सत्ता पक्ष या दोनो पक्षों से अलग रहने वाले सांसद क्रॉस वोटिंग करके इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी को वोट करें. रिटायर्ड न्यायाधीश बी सुदर्शन रेड्डी अपने एक फैसले की वजह से वाम झुकाव रखने वाले राजनीतिक धड़ों के पसंदीदा उम्मीदवार हैं. लंबी न्यायिक लड़ाई के बाद साल 2011 में सुप्रीम कोर्ट के तत्कालीन न्यायाधीश बी सुदर्शन रेड्डी और न्यायमूर्ति एसएस निज्जर की पीठ ने सलवा जुडूम को एक अवैध और असंवैधानिक संगठन करार दिया था.

आगामी 9 सितंबर 2025 को होने वाले 17वें उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए विपक्षी गठबंधन इंडिया ने अपने उम्मीदवार की घोषणा कर दी. ये सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज बी सुदर्शन रेड्डी होंगे, जो एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन की ही तरह दक्षिण भारत से हैं और उनकी ही तरह एक स्पष्ट वैचारिक स्टैंड लेते हैं. जहां सीपी राधाकृष्णन 17 साल की उम्र से ही आरएसएस से जुड़कर उसकी विचारधारा के समर्थक हैं, वहीं बी सुदर्शन रेड्डी अपने वाम झुकाव वाले लोकतांत्रिक रुख के लिए जाने जाते हैं. आंकड़ों के लिहाज से राधाकृष्णन का जीतना लगभग तय है लेकिन इंडिया गठबंधन ने उनके विरुद्ध बी सुदर्शन रेड्डी को उतारकर इसे वैचारिक ही नहीं, बल्कि दक्षिण बनाम दक्षिण की रोचक लड़ाई में बदल दिया है.

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने विपक्ष के साझा उम्मीदवार बी सुदर्शन रेड्डी को एक सिद्धांतवादी न्यायाधीश करार दिया है. उन्होंने रेड्डी को एक लोकतांत्रिक, संवैधानिक मूल्यों और बहुलतावाद में विश्वास रखने वाला सजग व्यक्ति बताया है. स्टालिन के मुताबिक उनकी उम्मीदवारी बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस समय लोकतांत्रिक संस्थाएं दबाव में हैं. अगर आंकड़ों के लिहाज से देखें तो सुदर्शन रेड्डी के जीतने के आसार नहीं हैं. उपराष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने के लिए 391 वोटों की जरूरत होगी जबकि एनडीए के पास फिलहाल जरूरत से 31 वोट ज्यादा हैं. लोकसभा के कुल 543 सदस्यों में से एक सीट खाली है, इसी तरह राज्यसभा की कुल 245 सीटों में से 5 सीटें खाली हैं. इस तरह कुल मौजूदा वोट ताकत 782 बनती है.

अत:जीतने के लिए किसी भी उम्मीदवार को कुल 391 वोट चाहिए होंगे, जबकि एनडीए के पास वर्तमान में कुल 422 सदस्य हैं. इंडिया गठबंधन के पास कुल 312 सांसद हैं यानी उसके पास बहुमत से 79 सांसद कम हैं. जबकि इन दोनो गठबंधनों के इतर 48 सांसद हैं, जो किसी भी गठबंधन में नहीं हैं. लेकिन अगर हम मान लें कि ये सभी बी सुदर्शन रेड्डी को वोट कर भी दें, तब भी इंडिया गठबंधन के समर्थकों की कुल संख्या 360 तक ही पहुंचेगी यानी उसे बहुमत के लिए 31 सांसदों की अब भी कमी होगी.

विपक्ष ने मैदान नहीं छोड़ा: इंडिया गठबंधन चाहता है कि वह मजबूत विपक्ष दिखे और देश को यह मैसेज जाए कि वैचारिक लड़ाई में विपक्ष ने किसी भी कीमत पर मैदान नहीं छोड़ा. इसलिए कांग्रेस के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन उपराष्ट्रपति पद की यह लड़ाई जोरदार ढंग से लड़ना चाहता है. इसके पीछे एक मकसद इस साल के अंत में बिहार में होने जा रहे विधानसभा चुनावों के लिए भी मतदाताओं को अपनी मजबूत रणनीति का संदेश देना है. कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्षी गठबंधन के लिए उपराष्ट्रपति पद की यह लड़ाई इसलिए भी जरूरी हो गई है, क्योंकि एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन का बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संगठन से संबंध है और विपक्ष अपने समर्थक मतदाताओं को यह संदेश देना चाहता है कि वह एक ऐसे घोषित संगठन के सदस्य को वॉकओवर नहीं दे सकता, राहुल गांधी दिन-रात जिसकी जबर्दस्त आलोचना करते हैं.

-लोकमित्र गौतम 7

ग्वालियर चंबल डायरी

चंबल में गरमा रहा वोट चोरी का मुद्दा, पटवारी

हरीश दुबे

राहुल गांधी ने दिल्ली में वोट चोरी का मुद्दा जोर शोर से उठाया तो चंबल भी गरमा गया. सिंधिया के गृहक्षेत्र में इस मुद्दे पर आंदोलन को धार देने की कमान खुद जीतू पटवारी ने संभाल ली है. वे 27 अगस्त को भिंड आ रहे हैं और यहां एक मैरिज गार्डन में वोट चोर गद्दी छोड़ सम्मेलन को संबोधित करेंगे. पहली बार भिंड में पार्टी ने दो जिलाध्यक्ष बनाए हैं. भिंड जिले में विधानसभा चुनाव में कांग्रेस तीन सीटें हार गई थी जिनमें पैंतीस साल से पार्टी का अभेद्य दुर्ग रही लहार सीट भी शामिल थी.

यही वजह है कि देहात की चार सीटों के लिए रामशीष बघेल को सदारत सौंपी गई है जबकि शहर की जिम्मेदारी पिंकी भदौरिया संभालेंगे. उधर ग्वालियर दक्षिण सीट पर सिर्फ

ढाई हजार वोट से हारे प्रवीण पाठक ने भी अपनी हार की वजह वोटचोरी को बताते हुए खुलाशा किया है कि उन्हें चुनाव हराने के लिए चुनाव से सिर्फ दो महीने पहले दक्षिण की मतदाता सूची में सवा आठ हजार वोट गुपचुप ढंग से जोड़ दिए गए और वोटों की यह घटबढ़ उनकी पार्टी से छिपाई गई. अपने नेता राहुल के सुर में ताल मिलाते हुए प्रवीण पाठक ने वोट चोरी को आजादी के बाद से अब तक का सबसे बड़ा वोट घोटाला करार देते हुए इस मुद्दे पर कोर्ट जाने का भी ऐलान कर दिया है.

सिफारिशों के बोझ तले दबे अध्यक्षजी की मजबूरी बनी जंबो कार्यकारिणी

ग्वालियर कांग्रेस में नए अध्यक्ष की नई कार्यकारिणी में जगह बनाने के लिए कार्यकर्ताओं ने जोड़तोड़ के साथ छत्रपों की गणेश परिक्रमा शुरू कर दी है. शहर कांग्रेस में जिलाध्यक्ष के बाद संगठन प्रभारी का पद ही खास माना जाता है, लिहाजा संगठन प्रभारी बनने और बनाने के लिए सबसे ज्यादा सिफारिशें लगाई गई हैं. अब तक ग्वालियर दक्षिण में संगठन प्रभारी की जिम्मेदारी संभाल रहे नेताजी की नजर जिले पर लगी है, इसके लिए बड़े नेताओं से भी ताकत लगवाई गई है. भूतपूर्व हो चुके पंडितजी ने जंबो कार्यकारिणी बनाई थी, हालांकि इसमें उनके लोग कम थे, पार्टी पर प्रभाव रखने वाले दीगर नेताओं द्वारा सौंपी गई सूचियों से लिए नाम ज्यादा थे. लिहाजा निगम चुनाव से डेढ़ साल पहले सभी को संतुष्ट करने के लिए विशाल आकार वाली कार्यकारिणी बनाना नए अध्यक्ष की भी मजबूरी होगी.

पुण्य बटोरने के साथ सियासी रसूख दिखाने की तैयारी

कैबिनेट मंत्री राकेश शुक्ला इन दिनों कुछ ज्यादा ही धार्मिक हो गए हैं. कई बार विधायक रहने और बीच में कुछ साल सियासत के हाशिए पर रहने के बाद 23 में पहली बार मंत्री बने शुक्ला यूं तो कथा, पुराण कराते ही रहे हैं लेकिन अब पितृपक्ष में वे वृंदावन धाम में श्रीमद्भागवत करा रहे हैं. धर्म कर्म का पुण्य बटोरने के साथ राजनीतिक रसूख दिखाने की भी तैयारी है. दिल्ली और भोपाल के बड़े नेताओं से खुद मुलाकात कर कथा का निमंत्रण दे रहे हैं. अभी तक गड़करी, सिंधिया और शिवराज को न्योत चुके हैं. फेहरिस्त अभी लंबी है.

नाराजगी के डर से रोककर रखी सूची

प्राधिकरण, निगम, बोर्ड के अध्यक्षों की सूची सीएम के पास तैयार रखी है, नए सूबा सदर के संज्ञान में भी है लेकिन पार्टी में नाराजगी के भय से सूची को रोककर रखा गया है. सबसे ज्यादा समस्या सिंधिया समर्थकों को एडजस्ट करने में आ रही है. महल ने ग्वालियर के तीन पाधिकरणों में से दो पाधिकरणों पर उन नेताओं

अपना अध्यक्ष बनवाने चेंबर चुनाव में कूदेंगे राजनीति के धुरंधर

इलाके के व्यापारियों और उद्यमियों की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी संस्था चैंबर ऑफ कॉमर्स के चुनाव पहली बार अंचल के परस्पर प्रतिद्वंदी नेताओं की गोलबंदी में फंसते दिख रहे हैं. अध्यक्ष पद पर ताल ठोकने की तैयारी कर चुके मुरार के पारस जैन को जहां नरेंद्र सिंह तोमर का समर्थन है वहीं मौजूदा अध्यक्ष डॉ. प्रवीण अग्रवाल सिंधिया खेमे से माने जा रहे हैं. खास बात यह कि पारस और प्रवीण, दोनों ही व्हाइट हाउस के चेहरे हैं और चुनाव में व्हाइट हाउस एक ही प्रत्याशी उतारेगा. देखना है कि प्रत्याशी चयन में नरेंद्र सिंह का दबदबा रहता है या फिर सिंधिया का...!

मोदी के मन की बात और राज की

पुरानी फिल्मी हीरोइन गाती थी मेरी बात रही मेरे मन में, कुछ कह न सकी उलझन में, मेरे सपने अधूरे हुए नहीं पूरे, आग लगी जीवन में! मोदी एक कुशल कम्युनिकेटर या संवाद प्रेषक हैं जो बड़ी सहजता से मन की बात कह जाते हैं जिसे सारा देश सुनता है. मन की बात कहने से पहले उसे मन में उपजाना पड़ता है. मन के बारे में गीता में कहा गया है कि मन की गति अश्व से भी चंचल होती है लेकिन निरंतर अभ्यास से उसे वश में किया जा सकता है. शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो मन को पूरी तरह वश में कर पाए. मेनका सामने आई तो विश्वामित्र का मन डोल गया. धर्मराज युधिष्ठिर का मन जुआ खेलने और पत्नी को दांव पर लगाने में जरा भी नहीं हिचकिचाया. मन परम स्वतंत्र है वह मनमानी किए चला जाता है. एक बार अमिताभ बच्चन के हताश होने पर उनके पिता डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने कहा था कि मन का हो तो अच्छा, मन का न हो तो और भी अच्छा! कभी ऊपरवाले की मर्जी इतनी प्रबल होती है कि मन की इच्छा पूरी नहीं हो पाती और मन मारकर रह जाना पड़ता है. मोदी के पहले किसी भी पीएम ने नियमित रूप से मन की बात कहने की पहल नहीं की.

मनमोहन इतने मौन रहते थे कि मन की बात समाने आने ही नहीं देते थे. वे सिर्फ सोनिया के मन मुताबिक चलते थे. उन्होंने पीएम पद पर 10 साल ऐसे ही बिता दिए. मन सिर्फ मोदी के पास है. मन की प्रेरणा से राज ठाकरे ने मनसे बना ली. मनसे का मन कभी कहता है कि अपनी राजनीति चमकानी है तो परप्रांतीयों को पीटो. कभी कहता है कि हिंदी का विरोध करो. मन की गति बड़ी प्रबल है. मोदी के सामने बिहार चुनाव है तो मनसे ने मुंबई महापालिका चुनाव के लिए उद्धव के साथ मनोमिलन किया है.

राजीव बंदवार

संपादकीय | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

14वीं बार दलबदल का धमाल, नागमणि कुशवाहा का

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार में मंत्री रह चुके बिहार के नेता नागमणि कुशवाहा ने 14वीं बार दलबदल कर एक अनोखा रिकार्ड बनाया है.

हमने कहा, जब उनका नाम नागमणि है तो उन्हें केंचुल बदलने से कौन रोक सकता है. डॉक्टर दिलबदल ऑपरेशन करते हैं तो नेता भी दलबदल करते हैं. बीजेपी ऑपरेशन लोटस के जरिए व्यापक दलबदल करवा देती है. महाराष्ट्र में शिवसेना और एनसीपी का 2 धड़ों में विभाजित हो जाना इसकी मिसाल है.

पड़ोसी ने कहा, %निशानेबाज, नागमणि की पूरी हिस्ट्री तो सुनिए. वह बीजेपी में तीसरी बार गए हैं. राष्ट्रीय जनता दल में 2 बार रह चुके हैं. नीतीशकुमार की पार्टी जदयू में भी 2 बार रहे हैं. नागमणि 1 बार शरद पवार की एनसीपी में और 1

बार उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी रालोसपा में भी रह चुके हैं. वह हर पार्टी में रहने का अनुभव लेते हैं. उनकी तुलना ऐसे दिलफेंक हीरो से की जा सकती है जो गाता है- मस्त बहारों का मैं आशिक, मैं जो चाहे यार करूं, चाहे गुलों के साए से खेलूं, चाहे कली से प्यार करूं!

हमने कहा, नागमणि 1999 में पहली बार चतरा चुनाव क्षेत्र से सांसद चुने गए. अटल सरकार को समर्थन देकर केंद्र में मंत्री बने. फिर बीजेपी छोड़कर प्रशांत किशोर के साथ शोषित इंकलाब पार्टी बनाई उनसे मोहभंग हुआ तो फिर बीजेपी में आ गए. 70 वर्षीय नागमणि ने कहा है कि अब बीजेपी मेरा आखिरी मुकाम हैं. इसके बाद पार्टी नहीं बदलूंगा.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जिस लहरी स्वभाव के नेता ने अब तक 14 बार पार्टी बदली है उसका क्या भरोसा ! वह फिर 15वीं बार दलबदल कर सकता है. गिरगिट रंग बदलने के अपने स्वभाव को कभी छोड़ नहीं सकता. राजनीति की थाली के हर पकवान का वह स्वाद लेता है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12000

-डॉ सागर खादीवाला

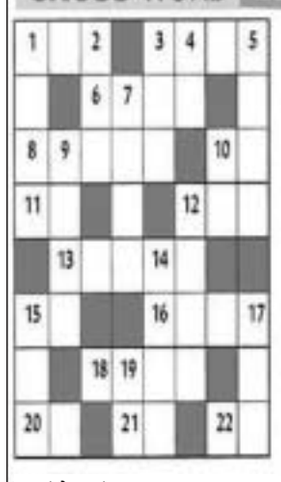

ऊपर से नीचे

1. उलझन दूर करना, गुत्थी खोलना, पेचीदगी दूर करना 2. समाचार, जानकारी, सूचना, संदेशा (उर्दू) 3. असभ्य, मूर्ख 4. तलछट, तेल की कीट 5. प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी जिसने गणित की पुस्तक बनाई, क्रीड़ा करने वाली 7. कभी, शायद (सं.) 9. बेल और पत्ते, जड़ी बूटी 10. तालाब, नृत्य और संगीत में समय और गति का परिमाण 12. बहुत संपन्न, समृद्ध 14. युद्ध, लड़ाई, खूरेजी 15. वह स्थान जहां सीमा का अंत होता हो (फ्रंटियर) 17. रीति, ढंग, उपाय (उर्दू) 19. शराब, मद्य, मदिरा (सं.)

बाएं से दाएं

1. सुंदर लेख, शुभ रेखाओं वाला (सं.) 3. गंगाजल भरने की शीशी या सुराही 6. व्यर्थ की बातें 8. जिसमें झालर लगी हो 10. कागज का तख्ता, ताप 11. संबंध, रिश्ता 12. एक प्रकार की सुगंधित फूलों वाली बेल, युवती 13. पर्वतों की श्रृंखला (सं.) 15. मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम 16. विष्णु (सं.) 18. महादेव, शिव के एक गण का नाम, समय जो अनंत और अखंड है 20. अंधकार, पाप (सं.) 21. ऊंचा और मोटा खंभा 22. तिलक, व्याख्या

Solution 11999

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में हानि होगी, वाणी में कठोरता तथा क्रोध में वृद्धि होगी, व्यय और संतान की चिन्ता से मन विचलित रहेगा, वर्ष के मध्य में राज्य सम्मान मिलेगा, सामाजिक प्रभाव बना रहेगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, अध्ययन में मन लगेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में नुकसान होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यय और संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी, मन विचलित रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा, अध्ययन में रूचि रहेगी, क्रोध की अधिकता रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक सुख और सौहार्द्र बना रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. गौर वर्ण का लम्बा दुबला पतला बुद्धिमान एवं निर्भीक मन की बात दूसरों पर जल्दी प्रकट नहीं करेगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. इंजीनियरिंग क्षेत्र में उन्नति करेगा. माता का भक्त होगा.

मेष- गिरते स्वास्थ्य के कारण आपकी कार्यक्षमता पर विपरीत अवसर पड़ेगा, जिससे कार्यों में देरी संभव है. किसी अनसोचे कार्य में व्यस्त रहना होगा.

वृषभ- धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिलेगा. यात्रा में सावधानी रखें. सोच समझकर कार्य करें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

मिथुन- आप पारिवारिक मामलों के समाधान को लेकर चिंतित रहेंगे. वाकपटुता से काम बिगड़ सकता हैं पुराने मित्रों का सहयोग मिलेगा.

कर्क- आपके व्यवहार में बदलाव से सहयोगी आश्चर्य में पड़ जायेगें. संपर्क क्षेत्र बढ़ेगा. आर्थिक कार्यों में सफ्लता के योग हैं. कुटुम्बियों का सहयोग मिलेगा.

सिंह- व्यवसायिक कार्यों के बीच तालमेल बैठाकर चलना होगा अन्यथा मुश्किल में पड़ जायेगें. अधिनस्थ वर्ग के सहयोग से लाभ मिलेगा.

कन्या- महत्वपूर्ण मामलों को टालने की बजाय शीघ्र निर्णय लें. अतिथि आगमन होगा. इष्टमित्रों का सहयोग मिलेगा. धर्म-कर्म, आध्यात्मिक कार्यों में रूचि रहेगी.

तुला- प्रभावशाली लोगों के संपर्क से लाभ मिलेगा. अधिक भरोसे में नुकसान हो सकता है. नवीन योजनाओं का विकास होगा. महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृश्चिक- छोटी सी बात को लेकर विवाद की संभावना है. सावधानी रखें, धैर्य से काम लें. शत्रु वर्ग परास्त होगा. माता पिता की ओर से शुभ समाचार मिलेगा.

धनु- युवाओं को मेहनत का प्रतिफ्ल मिलेगा. बच्चों को जोखिम के कार्य से दूर रखें. व्यवसायिक क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी. महत्वपूर्ण कार्य की जवाबदारी बढ़ेगी.

मकर- लापरवाही नुकसानदायी हो सकती है, नए प्रोजेक्ट को लेकर आप चिंतित रहेंगें. संतान की चिंता रहेगी. अनुकूल समय का लाभ मिलेगा.

कुम्भ- आप परिवार की खुशियों को लेकर लगातार प्रयासरत् रहेगें. मानसिक अस्थिरता रहेगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

मीन- कैरिअर में अच्छे अवसर मिलेंगे कार्य स्थल पर अपनी जिम्मेदारियों से पीछे न हटें. आकस्मिक धन प्राप्ति का योग है. नवीन योजनाओं का शुभारम्भ होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

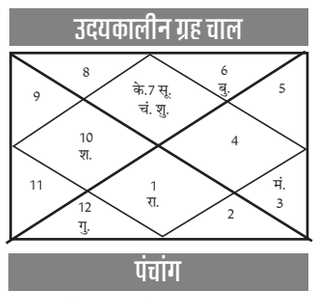

पंचांग

रा.मि. 31 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण चर्तुदशी भृगुवासरे दिन 11/37, आश्लेषा नक्षत्रे रात 1/6, वरीयान योगे शाम 4/27, शकुनि करणे सू.उ. 5/37 सू.अ. 6/23, चन्द्रचार कर्क रात 1/6 से सिंह, पर्व- श्राद्ध अमावस्या, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण चर्तुदशी को आश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, निकिल आदि वस्तुओं में नरमीं होगी. सरसों, अरंडी, मूंग, मोट के भाव में तेजी की चाल चलेगी. जीरा, धनियां, लालमिर्च के भाव में पूर्ववत् रहेंगे. भाग्यांक 1487 है.

SUDOKU 7132

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7131

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4